कुछ अटके, कुछ भटके

मृदुला गर्ग

Kuchh Atke, Kuchh Bhatke
by **Mridula Garg**

प्रकाशकः पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से
प्रकाशितः जनवरी 2006
भाषाः हिंदी
मुद्रणः पेंगुइन
मूल्यः रु 100.00
आई एस बी एनः 0143061933
ऐडिशनः पेपर बैक
फ़ॉरमेटः बी
पृष्ठः 161pp
वर्गीकरणः यात्रा संस्मरण
क्षेत्र अधिकारः विश्व

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** January 2006
- **Language:** Hindi
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs. 100.00
- **Cover Price:** Rs. 100.00
- **ISBN:** 0143061933
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 161pp
- **Classification:** Travelogue
- **Rights:** World

यात्रा, सफ़र, घुमक्कड़ी—हर कल्पनाशील इंसान की ख़्वाहिश होती है कि वह दुनिया के कोने-कोने में जाए, इतिहास के अनछुए, अनदेखे, किताबों में पढ़े स्थानों को देखे, उस दौर को अपने मन की आंखों से साक्षात देखे। इन्हीं सड़कों पर कभी इतिहास-प्रसिद्ध राजा-रानियां घूमे हैं, यहां भयानक नरसंहार हुए हैं, तस्वीरों में देखे समंदर की लहरें हक़ीक़त में कैसे चट्टानों पर आ-आकर टकराती हैं, जंगल के राजा के क्षेत्र में जाकर उससे रूबरू होना—एक अथाह क्षेत्र है अनुभवों का। कुछ ऐसे ही अनुभवों को सुप्रसिद्ध लेखिका मृदुला गर्ग ने अपनी रोचक, वर्णनात्मक शैली में अपने इस यात्रा-संस्मरण में उकेरा है।
कहते हैं, 'जहां न जाए रवि, वहां जाए कवि,' ऐसा ही प्रयास किया है लेखिका ने, लेकिन कल्पना के सहारे नहीं, सशरीर। ये रोमांचक विवरण सहसा ही कभी सूरीनाम, कभी काज़ीरंगा तो कभी केरल के वर्षावनों, अभयारण्यों में ले जाता है, तो कभी समंदर की नीली लहरें आकर पांव भिगो जाती हैं, अगले ही पल हिरोशिमा की त्रासदी देखकर आंखें नम हो जाती हैं। तो कीजिए मृदुला गर्ग के साथ कुछ अटकते, कुछ भटकते देश-विदेश की सैर!

लेखक परिचयः

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्तूबर 1938 में कोलकाता में हुआ। उनकी तमाम शिक्षा-दीक्षा दिल्ली में हुई। उन्होंने अर्थशास्त्र में दिल्ली स्कूल ऑफ़ इकोनोमिक्स से एम.ए. किया। 1975 में पहला उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' छपा। अब तक उनके ह उपन्यास, अस्सी कहानियां ('संगति-विसंगति' नामके दो खंडों में संग्रहीत), तीन नाटक व दो निबंध-संग्रह छप चुके हैं। उनके निबंध देश-विदेश की श्रेष्ठ पत्रिकाओं में छपते रहे हैं।

'चित्तकोबरा' उपन्यास का जर्मन अनुवाद 1987 में जर्मनी में प्रकाशित हुआ। अंग्रेज़ी अनुवाद 1990 में। 'कठगुलाब' उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद 'कंट्री ऑफ़ गुडबाइज़' 2003 में प्रकाशित हुआ। 'अनित्य' उपन्यास का अंग्रेज़ी अनुवाद शीघ्र प्रकाश्य है। उनकी अनेक कहानियां अन्य भारतीय भाषाओं तथा अंग्रेज़ी, जर्मन, जापानी व चेक भाषा में अनूदित हुई हैं।

पिछले तीन वर्षों से वे इंडिया टुडे में 'कटाक्ष' नाम से पाक्षिक स्तंभ लिख रही हैं।